भोजपुरी आपन मूल भाषा, समृद्धि बहुत जरूरी

भोजपुरी भाषा के मिठास से पुरा दुनिया वाकिफ वा। एकरा खूबी के बखान कईल, मतलब सूरज के दीया देखावे के समान वा। आधुनिकता के ई जुग में एगो ना कईगो भाषा सीख लीं, लेकिन आपन मूल भाषा त भोजपुरी ही वा। ई अईसन उदाहरण से भी समझल जा सकेला कि, एगो एसी क ठंडा आ ऊपर एगो प्रकृति के ठंडक, दुनहूं के अहसास में अंतर वा। कुछ अईसन ही भाषा आ बोली में वा। एकर अंतर के पकड़ल जरुरी वा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बार-बार ई बात कहल गईल वा कि आपन भाषा में पढ़ाक्ल जाव। हमार पूरा परिवार भोजपुरी बोले वाला ह। आजहूं एगो बड़ आबादी अईसन वा, जवन खड़ी बोली हिंदी ना बोल पावेले, लेकिन एह में अब बड़ मात्रा में संक्रमण हो रहल वा। भोजपुरी मूल रूप से भाषा के रूप में अवहू वा। भाषा के लेकर एगो नई सोच पैदा हो गाईल वा। आपन मूल भाषा के पिछड़ल होखला के रूप में लेवे लागल वा लोग। एही कारण से भोजपुरी वाला हिंदी में आ हिंदी वाला अंग्रेजी के ओर बढ़ल जा रहल वा। एह सोच से बचला के कोशिश करे के पड़ी। भोजपुरी समाज के ई अहसास होखे के चाहीं की भाषा आ बोली हमार योग्यता के आधार ना वा।

प्रो. आलोक कुमार

कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

समाज के एगो बड़ जिम्मेदारी वा कि बेहतर आ मूल भोजपुरी साहित्य सबके सामने आवे। सिनेमा एगो बड़ माध्यम बाटे, लेकिन आज क भोजपुरी सिनेमा अश्लीलता के शिकार हो रहल वा। इंटरनेट के अईला से भोजपुरी सिनेमा लगातार बढ़ रहल वा, लेकिन एहां पर साहित्य आ दर्शन गायब दिख रहल वा। एकरो पर सोचला के जरूरत वा। भोजपुरी के निर्गुण क आज भी कवनो तोड़ नईखे, लेकिन औरतन के देह के खूबसूरती से आगे आज क भोजपुरी सिनेमा बढ़ला के सोचते नईखे। निर्गुण जईसन कुछ अईसने प्रयास फिर से कईला के जरूरत वा। साहित्य के जरिये हिंसक खतम कईला के जरूरत वा। एकरा के खातिर हमनी के अधिक से अधिक प्रचार कईला के जरूरत वा। सुबह के अखबार से लेके, दिन भर के काम, आ सुतला से पहिले गावल या आपन परिवार में बात कईला तक भोजपुरी क ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कईल जाये त बदलाव ले आवल जा सकेला।

विश्वविद्यालय आ शोध संस्थान क भी एहिमें बड़ भूमिका हो सकेला। शब्दकोष बनावे के जरूरत वा। साथ में कहावतन के भी कोष बनावे के जरूरत वा। बात-बात में भोजपुरी कहावत के प्रयोग से भी बदलाव दिखी। कहावत एगो अलंकार बाटे। एकरा पर भी किताब निकाल जा सकेला। हम आपन बात करीं त हमार माई आज भी बड़ रूप में भोजपुरी कहावतन क प्रयोग करेली। कई लोग हमरा से कहल कि माताजी के कहावतन के लिपिबद्ध करवा लीं। काहे कि ई ऊ पीढ़ी वा, जवन मूल भोजपुरी के प्रयोग कर रहल वा। बाकिर त आज क पीढ़ी मिक्स भोजपुरी बोल रहल वा। अईसने प्रयास सभके करे के चाही। भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में अईला से केतना लाभ होखी या ना होखी, एह पर टिप्पणी त ना करब, लेकिन ई जरूर कहब की स्वीकृति बहुत जरूरी वा। एह स्वीकृति के अपनावे के जरूरत वा। आपन मूल भाषा समृद्ध होखे के चाहीं। एकर अलग अहसास बाटे।